शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पालि सार-साहित्य में 'नामरूपसमास' - एक अनुशीलन

डॉ. ज्ञानादित्य शाक्य
सहायक प्राध्यापक
स्कूल ऑफ़ बुद्धिस्ट स्टडीज एण्ड सिविलाईजेशन
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा
गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

बुद्धवचन एवं पालि तिपिटक-साहित्य का अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। बुद्धवचन के कारण ही पालि तिपिटक-साहित्य अस्तित्व में आ सका है। पालि-साहित्य को आधार मानकर कालान्तर में पालि अनुपिटक-साहित्य , पालि अट्ठकथा-साहित्य, पालि सार-साहित्य, पालि टीका-साहित्य, पालि अनुटीका-साहित्य, पालि वंस-साहित्य, पालि व्याकरण-साहित्य, पालि अलंकार-साहित्य एवं पालि छन्द-साहित्य की रचना की गयी, जिसके परिणामस्वरूप पालि-साहित्य के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि सम्भव हो सकी है। पालि तिपिटक-साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों की विषयवस्तु , बौद्ध धर्म-दर्शन एवं पालि अभिधम्म-साहित्य में वर्णित दार्शनिक विचारों के संक्षिप्तीकरण हेतु कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की गयी, जिन्हें पालि सार-साहित्य नामक विधा के अन्तर्गत रखा जा सकता है। पालि-साहित्य के इन महत्वपूर्ण सार-ग्रन्थों में से आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित 'नामरूपसमास' एक अति विशिष्ट कृति है। दसवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में रचित इस ग्रन्थ में एक सौ इक्कीस प्रकार के चित्तों के साथ-साथ बावन प्रकार के चैतसिकों के समूह एवं रूप नामक परमार्थ सत्य के सम्बन्ध में संक्षेप में वर्णन किया गया है। इसमें रचनाकार ने रसात्मक एवं आलंकारिक भाषा-शैली का प्रयोग किया है। यह ग्रन्थ बुद्धोपदिष्ट अभिधम्म-दर्शन के तीन महत्वपूर्ण अंगों अर्थात् चित्त, चैतसिक एवं रूप का संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत करता है। इस ग्रन्थ की विषयवस्तु न केवल बौद्ध दार्शनिकों , अपितु अन्य दर्शन परम्पराओं के जिज्ञासुओं के लिए भी बहुत ही उपयोगी है। आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित नामरूपसमास वर्तमान समय में बहुत ही प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द : *बुद्धवचन, पालि तिपिटक-साहित्य, पालि सार-साहित्य, आचार्य भदन्त खेम थेर , नामरूपसमास, खेमप्पकरण, चित्त, चैतसिक, रूप, आचार्य भदन्त नन्दञ्ञथेर, गन्धवंस, आचार्य भदन्त वाचिस्सर एवं खेमपकरण-टीका।*

प्रस्तावना

बुद्धवचन एवं पालि तिपिटक-साहित्य का अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। बुद्धवचन के कारण ही पालि तिपिटक-साहित्य अस्तित्व में आ सका है। बुद्धवचन के प्राचीन विभाजन के अनुसार समस्त बुद्धवाणी का सात भागों में विभाजित किया जाता है। इन विभाजनों में से पिटक के अनुसार किया जाने वाला विभाजन सम्पूर्ण बौद्ध जगत में अत्यधिक प्रचलित व महत्वपूर्ण माना जाता है। बुद्धवचन का पालि तिपिटक-साहित्य के रूप में वर्गीकृत किया जाना अत्यधिक सुविधाजनक व स्वाभाविक सा प्रतीत होता है, जिसे समस्त बौद्ध देशों में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

पालि तिपिटक-साहित्य के अन्तर्गत विनयपिटक , सुत्तपिटक, एवं अभिधम्मपिटक संकलन किया गया है। विनयपिटक के पाँच भाग - पाराजिक , पाचित्तिय, महावग्ग, चुल्लवग्ग, एवं परिवार हैं।

सुत्तपिटक के पाँच भाग - दीघनिकाय , मज्झिमनिकाय, संयुत्तनिकाय, अंगुत्तरनिकाय, एवं खुद्दकनिकाय हैं। खुद्दकनिकाय के पन्द्रह भाग - खुद्दकपाठ, धम्मपद, उदान, इतिवुत्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, जातक, निद्देस, पटिसम्भिदामग्ग, अपदान, बुद्धवंस, एवं चरियापिटक हैं। अभिधम्मपिटक के सात भाग - धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक एवं पट्ठान हैं। इसके साथ ही पालि-साहित्य को आधार मानकर कालान्तर में पालि अनुपिटक-साहित्य, पालि अट्ठकथा-साहित्य, पालि सार-साहित्य , पालि टीका-साहित्य , पालि अनुटीका-साहित्य, पालि वंस-साहित्य , पालि व्याकरण-साहित्य, पालि अलंकार-साहित्य एवं पालि छन्द-साहित्य की रचना की गयी , जिसके परिणामस्वरूप पालि-साहित्य के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि सम्भव हो सकी है।

पालि सार-साहित्य [1] नामक विधा को पालि साहित्य का एक महत्वपूर्ण भाग कहा जा सकता है। पालि तिपिटक-साहित्य के ग्रन्थों की विषयवस्तु के सारांश या सारतत्व को संक्षेप में अभिव्यक्त करने वाले ग्रन्थों को पालि सार-साहित्य नामक विधा के अन्तर्गत रखा जा सकता है। ग्रन्थों की विषयवस्तु में विद्यमान संक्षेपण शैली के आधार पर भी पालि साहित्य में उपलब्ध कुछ ग्रन्थों को पालि सार-साहित्य नामक विधा के अन्तर्गत रखा जा सकता है। यह सर्वविदित सत्य है कि पालि तिपिटक-साहित्य , पालि अनुपिटक-साहित्य एवं पालि अट्ठकथा-साहित्य के बाद एक ऐसी विधा का प्रचलन हुआ, जिसमें पालि तिपिटक-साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों की विषयवस्तु को कम से कम शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था। यह विधा पालि अट्ठकथा-साहित्य के ठीक विपरीत थी। यह सर्वविदित है कि पालि तिपिटक-साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के सरलीकरण एवं व्याख्या के हेतु ही पालि अट्ठकथा-साहित्य की रचना की गयी ; ठीक इसी प्रकार से पालि तिपिटक-साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के संक्षिप्तीकरण के लिए भी विपुल साहित्य की रचना गयी। पालि भाषा व साहित्य के विभिन्न आचार्यों, अट्ठकथाकारों एवं कवियों ने पालि तिपिटक-साहित्य की विषयवस्तु को गद्यात्मक शैली, पद्यात्मक शैली के साथ-साथ गद्य-पद्य मिश्रित शैली में बहुत ही संक्षेप में अभिव्यक्त किया है। इस विधा के अन्तर्गत विशेष रूप से पालि तिपिटक-साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों की विषयवस्तु, बौद्ध धर्म-दर्शन एवं पालि अभिधम्म-साहित्य में वर्णित दार्शनिक विचारों के संक्षिप्तीकरण हेतु कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की गयी, जिन्हें पालि सार-साहित्य नामक विधा के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि विनयपिटक एवं अभिधम्मपिटक के ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के आधार पर पालि भाषा व साहित्य के विभिन्न आचार्यों, अट्ठकथाकारों एवं कवियों ने कई ऐसे ग्रन्थों की रचना की , जो पालि सार-साहित्य नामक विधा के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं , लेकिन सुत्तपिटक पर आधारित पालि सार-ग्रन्थ देखने को नहीं मिलते हैं। विनयपिटक के पालि सार-साहित्य के अन्तर्गत पातिमोक्ख , आचार्य भदन्त बुद्धदत्त थेर द्वारा विरचित विनयविनिच्छय एवं उत्तरविनिच्छय नामक ग्रन्थों का नाम लिया जा सकता है। अभिधम्मपिटक के पालि सार-साहित्य के अन्तर्गत आचार्य भदन्त बुद्धदत्त थेर द्वारा विरचित अभिधम्मावतार, आचार्य भदन्त बुद्धदत्त थेर द्वारा विरचित रूपारूपविभाग, आचार्य भदन्त

अनुरुद्ध थेर द्वारा विरचित अभिधम्मत्थसंगह , आचार्य भदन्त अनुरुद्ध थेर द्वारा विरचित नामरूपपरिच्छेद, आचार्य भदन्त अनुरुद्ध थेर द्वारा विरचित परमत्थविनिच्छय, आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित मोहविच्छेदनी, आचार्य भदन्त चुल्ल-धम्मपाल थेर द्वारा विरचित सच्चसंखेप, आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित नामरूपसमास अर्थात् खेमप्पकरण एवं आचार्य भदन्त सद्धम्मजोतिपाल थेर द्वारा विरचित नामचारदीपक अर्थात् नामचारदीपनी नामक ग्रन्थों का नाम लिया जा सकता है। इसके साथ ही इस प्रकार की संक्षेपण-शैली में विरचित ग्रन्थों की संख्या नौ बतायी जाती है।[2] इन ग्रन्थों के अलावा और भी अन्य ग्रन्थ हो सकते हैं , लेकिन जिन्हें इस श्रेणी में सम्मिलित करना उचित लगा , मैंने उन ग्रन्थों को पालि सार-साहित्य नामक विधा के अन्तर्गत शामिल किया है। पालि-साहित्य के इन महत्वपूर्ण सार-ग्रन्थों में से आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित नामरूपसमास एक अति विशिष्ट कृति है, जिसके बारे में निम्न प्रकार से समझा जा सकता है - पालि सार-साहित्य में 'नामरूपसमास' को एक महत्वपूर्ण कृति माना जाता है , जो पालि अभिधम्म-साहित्य के दार्शनिक विचारों को संक्षेप में जानने के लिए एक उत्कृष्ट निधि है। 'नामरूपसमास'[3] को पालि सार-साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में स्वीकार किया जाता है। पी. धम्माराम द्वारा सम्पादित नामरूपसमास[4] का प्रकाशन पालि टैक्स्ट सोसायटी, लन्दन के जर्नल में पृष्ठ संख्या 3 से 19 तक अर्थात् 17 पृष्ठों में सन् 1916 में किया जा चुका है। बौद्ध धर्म-दर्शन एवं पालि अभिधम्म-साहित्य के अनुसार नामरूपसमास को पालि सार-साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है।

'नामरूपसमास' का अनुशीलन

नामरूपसमास को खेमप्पकरण के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। नामरूपसमास शब्द तीन शब्दों से मिलकर बना है - नाम , रूप, समास। यहाँ पर नाम शब्द का अभिप्राय संज्ञा [5], नाम आदि, व्यक्तित्व का चैतसिक भाग [6], नाम (वाला), नाम[7], चित्त, मन, मानस, हृदय एवं पण्डर से है ; रूप शब्द का अभिप्राय चक्षुशेन्द्रीय का विषय, भौतिक पदार्थ [8], आकार, मूर्ति, रूप[9], छह आयतनों में से एक , नश्वर शरीर एंव चार महाभूतों से प्रादुर्भूत काया से है ; समास शब्द का अभिप्राय शब्दों का संक्षिप्त रूप, समास[10], संक्षेप[11], सार एवं सारांश से है। नाम शब्द के अभिप्राय एक सौ इक्कीस प्रकार के चित्तों तथा बावन प्रकार के चैतसिकों के समूह से है। [12] नामरूप शब्द को नाम एवं रूप के साथ-साथ चेतना एवं भौतिक तत्व के रूप में भी स्पष्ट किया गया है।[13] उपर्युक्त शब्दों के अर्थों पर चिन्तन करते हुए ऐसा कहा जा सकता है कि ऐसा ग्रन्थ , जिसमें शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित नाम अर्थात् एक सौ इक्कीस प्रकार के चित्तों के साथ-साथ बावन प्रकार के चैतसिकों के समूह एवं रूप नामक परमार्थ सत्य के सम्बन्ध में संक्षेप में वर्णन किया गया हो, उसे नामरूपसमास कहा जा सकता है। नामरूपसमास को खेमप्पकरण के रूप में भी सम्बोधित किया जाता है। इसके साथ ही पालि-साहित्य का इतिहास के लेखक डॉ.भरत-सिंह उपाध्याय के अनुसार यह (खेमप्पकरण) परमत्थदीप के नाम से भी प्रसिद्ध है। [14] पालि अभिधम्म-साहित्य पर आधारित विरचित नामरूपसमास को खेमप्पकरण के नाम से भी जाना जाता है। [15] जबकि बौद्ध धर्म-दर्शन के मर्मज्ञ महामनीषी त्रिपिटकाचार्य डॉ.भिक्षु धर्मरक्षित ने अपनी कृति बौद्ध धर्म-दर्शन तथा

साहित्य में नामरूपसमास एवं खेमप्पकरण को अलग-अलग दो रचनाएँ माना है।[16] लेकिन अधिकतर विद्वानों का मानना है कि नामरूपसमास एवं खेमप्पकरण दोनों नाम एक ही ग्रन्थ के नाम के पर्यायवाची शब्द हैं। अतः यहाँ पर मैंने भी दोनों शीर्षकों को एक ही कृति माना है।

आचार्य भदन्त खेम थेर ने नामरूपसमास की रचना की है। नामरूपसमास के रचनाकार को खेम नामक आचार्य (आचार्य भदन्त खेम थेर) के रूप में बताते हुए म्यानमार देश के वनवासी आचार्य भदन्त नन्दप ञञ थेर अपनी कृति गन्धवंस में कहते हैं कि खेमो नामाचरियो खेमं नाम पकरणं अकासि।[17] अर्थात् खेम नामक आचार्य (आचार्य भदन्त खेम थेर) ने खेम नामक प्रकरण (खेमप्पकरण या नामरूपसमास) की रचना की।

म्यानमार देश के वनवासी आचार्य भदन्त नन्दपञञ थेर द्वारा विरचित गन्धवंस के वर्णनानुसार आचार्य भदन्त खेम थेर को श्रीलंका देश का एक विद्वान बौद्ध भिक्षु माना जाता है अर्थात् ऐसा कहा जा सकता है कि आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित ग्रन्थ श्रीलंका देश से सम्बन्धित है। आचार्य भदन्त नन्द ञञ थेर ने गन्धवंस में आचार्य भदन्त खेम थेर को श्रीलंका देश का आचार्य माना है।[18] श्रीलंका देश के आचार्य भदन्त खेम थेर ने खेमप्पकरण (नामरूपसमास) ने रचना स्वयं अपनी ही प्रेरणा से की है , जिसका उल्लेख करते हुए आचार्य भदन्त नन्दप ञञ थेर कहते हैं कि खेमो नाम गन्धो अत्तनो मतिया खेमाचरियेन कतो।[19] अर्थात् खेम नामक ग्रन्थ (खेमप्पकरण या नामरूपसमास) आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा स्वविवेक (आत्म प्रेरणा) से रचा गया। इसके साथ ही जी.पी. मललसेकर[20] एवं के.आर. नोर्मन[21] जैसे बौद्ध विद्वान भी नामरूपसमास को श्रीलंका देश के आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित कृति मानते हैं। जबकि बौद्ध धर्म-दर्शन तथा साहित्य के रचनाकार डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित ने नामरूपसमास को स्थविर खेमाचार्य एवं खेमप्पकरण को क्षेम स्थविर द्वारा विरचित माना है।[22] उपर्युक्त साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि खेमप्पकरण के नाम से भी सम्बोधित किये जाने वाले पालि अभिधम्म-साहित्य पर आधारित विरचित नामरूपसमास की रचना श्रीलंका देश के आचार्य भदन्त खेम थेर नामक बौद्ध विद्वान ने की है।

श्रीलंका देश के आचार्य भदन्त खेम थेर के द्वारा विरचित नामरूपसमास का रचनाकाल दसवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दी के आसपास माना जाता है। नामरूपसमास पर विरचित टीका-ग्रन्थ , जो आचार्य वाचिस्सर द्वारा रचित है , का रचनाकाल बारहवीं शताब्दी माना जाता है। स्वाभाविक -सी बात है कि नामरूपसमास की रचना इस टीका-ग्रन्थ की रचना से एक या दो शताब्दी पहले की गयी होगी। इस आधार पर नामरूपसमास का रचनाकाल दसवीं या ग्यारहवीं शताब्दी माना जा सकता है। के.आर. नोर्मन[23] ने भी नामरूपसमास का रचनाकाल दसवीं या ग्यारहवीं शताब्दी ही माना है। जबकि बौद्ध धर्म-दर्शन तथा साहित्य के रचनाकार डॉ.भिक्षु धर्मरक्षित ने स्थविर खेमाचार्य द्वारा विरचित नामरूपसमास एवं क्षेम स्थविर द्वारा विरचित खेमप्पकरण अठारहवीं शताब्दी की रचना माना है।[24]

शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा देशित अभिधम्म सम्बन्धी विस्तृत उपदेशों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से ही आचार्य भदन्त खेम थेर ने नामरूपसमास की रचना की। इसीलिए इसे पालि

अभिधम्म-साहित्य के ग्रन्थों का एक महत्वपूर्ण पालि सार-ग्रन्थ कहा जा सकता है। इस ग्रन्थ की विषयवस्तु का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस महत्वपूर्ण कृति को धम्मसंगणि आदि अभिधम्मपिटक के ग्रन्थों में वर्णित विषयवस्तु के आधार पर रचा गया है। रचनाकार ने विषयवस्तु को बुद्धोपदिष्ट अभिधम्म के अनुसार ही संक्षिप्त रूप से अभिव्यक्त किया है , न कि केवल अपने स्वयं के विचारों के अनुसार। इसीलिए पालि अभिधम्म-साहित्य के ग्रन्थों के मध्य इस ग्रन्थ की प्रमाणिकता बहुत अधिक मानी जाती है।

नामरूपसमास के नामकरण से ही ग्रन्थ की सम्पूर्ण विषयवस्तु का आकलन किया जा सकता है। इसमें एक सौ इक्कीस प्रकार के चित्तों के साथ-साथ बावन प्रकार के चैतसिकों के समूह एवं रूप का वर्णन किया गया है। बौद्ध धर्म-दर्शन एवं पालि अभिधम्म-साहित्य के अनुसार नामरूप शब्द को बौद्ध शब्दावली का एक महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्द माना जाता है। पालि अभिधम्म-साहित्य के अनुसार , कामावचर एवं रूपावचर लोक में रहने वाले दृश्यमान सत्वों के अस्तित्व को दो प्रकार से विभाजित किया गया है - नाम एवं रूप। प्राणियों के अस्तित्व में दृश्यमान जितने भी भौतिक तत्व जैसे - हाथ, पैर आदि हैं , उनका सामूहिक नाम रूप है। सीतुण्हादिविरोधिपच्चेहि रुप्पतीति रूपं। अर्थात् शीत, उष्ण आदि विरोधी प्रत्ययों से जो विकार को प्राप्त हो जाते हैं , उन्हें रूप कहते हैं। अर्थात् शीत, उष्ण आदि विरोधी कारणों के समागम से विकार को प्राप्त हो जाने वाले धर्म रूप हैं। [25] ये धर्म अपने आकार-प्रकार , वर्ण इत्यादि बदलते रहते हैं।[26]

सत्वों के सम्पूर्ण अस्तित्व में रूप के अलावा जो कुछ भी होता है , वह सामूहिक रूप से नाम कहलाता है। नाम शब्द को बौद्ध शब्दावली का एक महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्द माना जाता है। नाम शब्द का मूल रूप नम् है। इसका अर्थ 'नमित' होना होता है। जो नमित होता है , उसे नाम कहा जाता है। नाम अर्थात् चित्त चैतसिक की ओर नमित होता है। इसमें चित्त, चैतसिक के ग्राह्य विषय की ओर नमित होने की प्रवृत्ति पायी जाती है। [27] यह उनका प्रमुख लक्षण है। बौद्ध धर्म-दर्शन में नाम को एक सौ इक्कीस प्रकार के चित्तों के साथ-साथ बावन प्रकार के चैतसिकों के सामूहिक नाम के रूप में सम्बोधित किया जाता है।

नामरूप शब्द का अभिप्राय सत्व के मानसिक एवं भौतिक तत्वों से है। रूप शब्द का अभिप्राय रूप-स्कन्ध से है, जो मानव शरीर का निर्माण करते हैं। एक सौ इक्कीस प्रकार के चित्तों एवं बावन प्रकार के चैतसिकों को छोड़कर जो भी भौतिक तत्व हैं, वे रूप कहे जाते हैं। बौद्ध धर्म-दर्शन एवं पालि अभिधम्म-साहित्य के अनुसार, रूप अट्ठाईस प्रकार के होते हैं , जिसके अन्तर्गत चार महाभूत एवं चौबीस उपादाय रूप आते हैं। चार महाभूतों को आधारभूत तत्वों के रूप में भी जाना जाता है। ये चार महाभूत पृथ्वी-धातु , जल-धातु, अग्नि-धातु एवं वायु-धातु होते हैं। पृथ्वी-धातु, जल-धातु, अग्नि-धातु एवं वायु-धातु नामक चार महाभूतों से प्रादुर्भूत रूप को उपादाय रूप कहते हैं , जिनकी संख्या चैबीस होती है। इन उपादाय रूपों को चक्षु, श्रोत, घ्राण, जीभ, काया, वर्ण, शब्द, रस, गन्ध, स्त्री-इन्द्रिय, पुरुष-इन्द्रिय, जीवन (शारीरिक) अर्थात् जीवितेन्द्रिय, दो विज्ञप्तियाँ, आकाश-धातु, लघुता, मृदुता, कर्मण्यता, उपचय अर्थात् आरम्भिक जन्म, सन्तति अर्थात् आगामी जन्म , जरता अर्थात्

जीर्णता या बुढ़ापा, अनित्यता, ओज अर्थात् पोषक तत्व एवं वस्तुरूप अर्थात् हृदयरूप के रूप जाना जाता है।

पालि अभिधम्म-साहित्य के अनुसार पृथ्वी-धातु , जल-धातु, अग्नि-धातु, वायु-धातु, चक्षु, श्रोत, घ्राण, जीभ, काया, वर्ण, शब्द, रस, गन्ध, स्त्री-इन्द्रिय, पुरुष-इन्द्रिय, वस्तुरूप अर्थात् हृदयरूप , जीवन (शारीरिक) अर्थात् जीवितेन्द्रिय एवं ओज अर्थात् पोषक तत्व नामक अठारह रूपों को निष्पन्न रूप में जाना जाता है। ठीक इसी प्रकार से आकाश-धातु, दो विज्ञप्तियाँ (काय-वि ञ्ञत्ति एवं वची-विञ्ञत्ति), लघुता, मृदुता, कर्मण्यता, उपचय अर्थात् आरम्भिक जन्म, सन्तति अर्थात् आगामी जन्म , जरता अर्थात् जीर्णता या बुढ़ापा एवं अनित्यता नामक दस रूपों को अनिष्पन्न रूप के रूप में जाना जाता है।

बौद्ध धर्म-दर्शन एवं पालि अभिधम्म-साहित्य के अनुसार चार परमार्थ सत्य कहे जाते हैं, वे चित्त, चैतसिक, रूप एवं निर्वाण के रूप में जाने जाते हैं। आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित नामरूपसमास एक ऐसा ग्रन्थ है , जिसमें निर्वाण को छोड़कर शेष तीन परमार्थ सत्यों अर्थात् चित्त, चैतसिक एवं रूप की चर्चा की गयी है। अर्थात् कहा जा सकता है कि यह ग्रन्थ बुद्धोपदिष्ट अभिधम्म के तीन चैथाई भाग का वर्णन प्रस्तुत करता है। पालि अभिधम्म-साहित्य पर आधारित नामरूपसमास नामक ग्रन्थ एक महत्वपूर्ण दार्शनिक ग्रन्थ है , जो आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित है। इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण विषयवस्तु चित्त , चैतसिक एवं रूप नामक तीन परमार्थ सत्यों पर आधारित है , जिसे ग्रन्थ के रचनाकार ने एकूननवुतिचित्तानि (नबासी चित्त) , एकवीसति कुसलचित्तानि (इक्कीस कुशलचित्त) , द्वादस अकुसलचित्तानि (बारह अकुशलचित्त) , छत्तिंस विपाकचित्तानि (छत्तीस विपाकचित्त) , वीसति किरियाचित्तानि (बीस क्रियाचित्त) , पकिण्णकं (प्रकीर्णक) , चित्त-चेतसिक-कथा (चित्त चैतसिक कथा) , कामावचर-चित्तकथा (कामावचर चित्तकथा), कुसलचेतसिका (कुशल चैतसिक) , अकुसलचेतसिका (अकुशल चैतसिक), कुसलविपाकचेतसिका (कुशल-विपाक-चैतसिक), अकुसलविपाकचेतसिका (अकुशल-विपाक-चैतसिक) एवं किरियाचेतसिका (क्रिया-चैतसिक) नामक बिन्दुओं के माध्यम से अभिव्यक्त करते हुए ग्रन्थ के अन्त में रूप से सम्बन्धित अट्ठाईस पालि गाथापद दिये हैं।

आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित 'नामरूपसमास' में काव्यात्मकता के तत्व विद्यमान हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में मंगलाचरण के रूप में बुद्ध, धर्म एवं संघ के प्रति अपनी असीम श्रद्धा भावना को प्रकाशित करते हुए आचार्य भदन्त खेम थेर कहते हैं कि हजारों चक्षुओं के उद्यान में वर्षावास करते हुए नरों के स्वामी अर्थात् शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने गम्भीर एवं निपुण धर्म को प्रकाशित किया। उन नाथ अर्थात् शाक्यमुनि गौतम बुद्ध, धर्म एवं संघ को नमस्कार करते हुए, नाम-रूप अर्थात् चित्त-चैतसिक एवं रूप के सारांश को मेरे (नामरूपसमास नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य भदन्त खेम थेर) द्वारा बताया गया है। कृपया इसे ध्यानपूर्वक सुनें।

नवासी प्रकार के चित्त

इसके बाद आचार्य भदन्त खेम थेर ने अपनी कृति नामरूपसमास में अति संक्षेप में नवासी प्रकार के चित्तों का वर्णन किया है। कुशल-अकुशल-विपाक-क्रिया भेद के अनुसार यहाँ पर इक्कीस कुशलचित्तों, बारह अकुशलचित्तों, छत्तीस विपाकचित्तों एवं बीस क्रियाचित्तों का वर्णन किया गया है। इक्कीस कुशलचित्तों के अन्तर्गत

आठ कामावचर-चित्तों, पाँच रूपावचर-चित्तों, चार अरूपावचर-चित्तों एवं चार लोकुत्तर-चित्तों का वर्णन किया गया है। अकुशलचित्तों को तीन प्रकार से विभाजित करके आठ लोभसहगत चित्तों, दो प्रतिघसम्प्रयुक्त चित्तों एवं दो एकहेतुक चित्तों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। काम-भूमि, रूप-भूमि, अरूप-भूमि एवं लोकुत्तर-भूमि के अनुसार विपाकचित्तों को चार भागों में विभाजित करके प्रस्तुत किया गया है। तेईस कामावचर-विपाकचित्तों, जो कुशल-विपाक एवं अकुशल-विपाक में विभक्त होते हैं , का वर्णन किया गया है। यहाँ पर सोलह कुशल-विपाकों एवं सात अकुशल-विपाकों का वर्णन किया गया है। कुशल-विपाकों को अहेतुक एवं सहेतुक में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है। क्रियाचित्तों को कामावचर, रूपावचर एवं अरूपावचर के रूप में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है। यहाँ पर ग्यारह कामावचर क्रियाचित्तों , पाँच रूपावचर क्रियाचित्तों एवं चार अरूपावचर क्रियाचित्तों का वर्णन किया गया है। इस प्रकार के वर्णन के साथ ही नवासी प्रकार के चित्तों का सारांश समाप्त हो जाता है।

तदुपरान्त आचार्य भदन्त खेम थेर ने अपनी कृति 'नामरूपसमास' में प्रकीर्णकों का उल्लेख करते हुए चित्त एवं चैतसिक नामक दो परमार्थ सत्यों का वर्णन किया है। इसके अन्तर्गत कामावचर चित्तों , कुशल चैतसिकों , अकुशल चैतसिकों कुशल-विपाक-चैतसिकों, अकुशल-विपाक-चैतसिकों एवं क्रिया-चैतसिकों का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ के अन्त में अट्ठाईस पालि गाथापदों के माध्यम से पृथ्वी-धातु , जल-धातु, अग्नि-धातु, वायु-धातु, चक्षु, श्रोत, घ्राण, जीभ, काया, वर्ण, शब्द, रस, गन्ध, स्त्री-इन्द्रिय, पुरुष-इन्द्रिय, जीवन (शारीरिक) अर्थात् जीवितेन्द्रिय , दो विज्ञप्तियाँ, आकाश-धातु, लघुता, मृदुता, कर्मण्यता, उपचय अर्थात् आरम्भिक जन्म , सन्तति अर्थात् आगामी जन्म, जरता अर्थात् जीर्णता या बुढ़ापा , अनित्यता, ओज अर्थात् पोषक तत्व एवं वस्तुरूप अर्थात् हृदयरूप नामक अट्ठाईस भौतिक तत्वों अर्थात् रूपों का वर्णन किया गया है। इसके साथ ही नामरूपसमासो समत्तो नामक शब्दों के साथ आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित नामरूपसमास नामक कृति समाप्त हो जाती है।

गद्य-पद्य का मिश्रण

आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित नामरूपसमास नामक ग्रन्थ पालि सार-साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है। रचनाकार ने ग्रन्थ की विषयवस्तु को गद्यात्मक शैली के साथ-साथ पद्यात्मक शैली में अभिव्यक्त किया है। रचनाकार ने ग्रन्थ की सामग्री को और अधिक रोचक बनाने के लिए तैंतीस पालि गाथापदों का भी प्रयोग किया है। इसमें गेयात्मकता से परिपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को आकर्षक एवं सुगम ढंग से प्रस्तुत करने हेतु गेयात्मकता से ओतप्रोत भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को बहुत ही आकर्षक, सार्थक, गुणयुक्त एवं दोषरहित शब्दों के माध्यम से प्रकाशित किया गया है , जो गेयात्मकता से परिपूर्ण है। गेयात्मकता से परिपूर्ण होने के कारण नामरूपसमास में वर्णित सामग्री का अध्ययन करने से पाठक एवं श्रोताओं को रसपूर्ण आनन्द एवं प्रसन्नता की हर्षोल्लासपूर्ण स्थिति की प्राप्ति होती है। नामरूपसमास की सम्पूर्ण विषयवस्तु का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस ग्रन्थ का रचनाकार आचार्य भदन्त खेम थेर बुद्धोपदिष्ट अभिधर्म दर्शन के साथ-साथ पालि भाषा व साहित्य के ज्ञानी पण्डित रहे हैं। ग्रन्थ

में प्रयुक्त भाषा-शैली सरल, सुबोध एवं परिमार्जित है, लेकिन कहीं-कहीं पर विषयवस्तु की गम्भीरता के कारण कठिन शब्दावली का प्रयोग किया गया है। ग्रन्थ के रचनाकार ने विषयवस्तु को अभिव्यक्त करते समय छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया है, लेकिन कहीं-कहीं पर लम्बे-लम्बे वाक्यों का भी प्रयोग किया है। ग्रन्थ की वर्ण्य-शैली पर अभिधम्मपिटक के ग्रन्थों के साथ-साथ अभिधम्मत्थसंगहो जैसे ग्रन्थों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके साथ ही , ग्रन्थ में अभिधम्मपिटक में प्रयुक्त भाषा-शैली का प्रभाव भी देखा जा सकता है। ग्रन्थ की वर्णन शैली में आकर्षकता एवं सहजता देखी जा सकती है। उन्होंने वर्णित सामग्री को सरल, आकर्षक एवं रुचिकर बनाने हेतु आवश्यकतानुसार रसात्मक एवं आलंकारिक भाषा-शैली का प्रयोग भी किया है।

बौद्ध धर्म-दर्शन एवं पालि अभिधम्म-साहित्य में वर्णित एक सौ इक्कीस प्रकार के चित्तों , बावन प्रकार के चैतसिकों एवं अट्ठाईस प्रकार के रूपों के सारतत्व को प्रकाशित करने के कारण नामरूपसमास को पालि सार-साहित्य की एक अद्वितीय कृति कहा जा सकता है। यह ग्रन्थ दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ धार्मिक एवं साहित्यिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है। इस कृति को साहित्यिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जा सकता है ; क्योंकि इस ग्रन्थ की विषयवस्तु को आधार मानकर आचार्य भदन्त वाचिस्सर ने खेमपकरण-टीका की रचना है। आचार्य भदन्त नन्दप ञत्रथेर ने भी गन्धवंस में आचार्य भदन्त वाचिस्सर को खेमपकरण-टीका का रचनाकार बताया है। इसके साथ ही खेमपकरण-टीका को आचार्य भदन्त वाचिस्सर द्वारा आत्म-प्रेरणा से विरचित कृति माना है। पालि साहित्य का इतिहास के रचनाकार महापण्डित राहुल सांकृत्यायन भी ऐसा मानते हैं कि आचार्य भदन्त वाचिस्सर ने नामरूपसमास की वर्णित सामग्री के आधार पर खेमप्पकरण-टीका नामक ग्रन्थ रचना की है। अतः निःसन्देह, नामरूपसमास एक ऐसा ग्रन्थ है , जो पालि सार-साहित्य की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व साहित्य की एक श्रेष्ठ निधि है। पालि सार-साहित्य की लघु कृति होते हुए भी नामरूपसमास को एक श्रेष्ठ रचना कहा जा सकता है।

निष्कर्ष

बौद्ध-दर्शन को भारतीय दर्शन परम्परा का एक अभिन्न अंग माना जाता है। बौद्ध-दर्शन के बिना भारतीय दर्शन में सम्पूर्णता नहीं आ पाती है। पालि साहित्य एक ऐसा महत्वपूर्ण स्रोत है , जो बौद्ध धर्म-दर्शन को सुरक्षित रखे हुए है। यह ग्रन्थ बुद्धोपदिष्ट अभिधम्म-दर्शन के तीन महत्वपूर्ण अंगों अर्थात् चित्त , चैतसिक एवं रूप का बहुत ही सुन्दर, लेकिन संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करता है। इस ग्रन्थ की विषयवस्तु न केवल बौद्ध दार्शनिकों, अपितु अन्य दर्शन परम्पराओं के जिज्ञासुओं के लिए भी बहुत ही उपयोगी है। अतः आचार्य भदन्त खेम थेर द्वारा विरचित नामरूपसमास वर्तमान समय में भी बहुत ही प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 प्राप्त जानकारी के अनुसार, पालि सार-साहित्य का प्रयोग अब तक महापण्डित राहुल सांकृत्यायन , त्रिपिटकाचार्य डॉ..भिक्षु धर्मरक्षित एवं डॉ. भरत सिंह उपाध्याय जैसे भारतीय विद्वानों ने पालि-साहित्य का इतिहास नामक अपनी-अपनी कृतियों में नहीं किया है। मैंने पालि तिपिटक-साहित्य के ग्रन्थों की विषयवस्तु के सारांश को प्रस्तुत करने वाले संक्षिप्त ग्रन्थों को पालि सार-साहित्य नामक विधा के अन्तर्गत रखने का प्रयास किया है। पालि साहित्य में उपलब्ध ग्रन्थों की

प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए मुझे पालि सार-साहित्य नामक शब्द का प्रयोग करना समीचीन प्रतीत होता है।

2 Bimala Churn Law, A History of Pali Literature, Delhi: Indological Book House, 1983, p.599.

3 नामरूपसमासो (सम्पादक) रामशंकर त्रिपाठी , वाराणसीः सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 1989, पृ.7-23

4 P. Dhammārāma, Nāmarūsamāso, Journal of the Pali Text Society 1915-1916, 1916 (Editors) T.W. Rhys Davids & Mrs. Rhys Davids, London: Humphrey Milford, Oxford University Press Warehouse, Amen Corner, E.C., pp.1-19.

5 अभिधानप्पदीपिका एकक्खरकोससहिता (पालिसद्दकोसो) (सम्पादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री वाराणसीः बौद्ध-भारती, 1981, पृ.56

6 पालि-हिन्दी कोश (सम्पादक) भदन्त आनन्द कौसल्यायन, नागपुरः सुगत प्रकाशन कम्पनी , 1997, पृ.165

7 A Dictionary of the Pali Language (Ed.) Robert Caesar Childers, New Delhi: Asian Educational Services, 2003, p.257.

8 पालि-हिन्दी कोश, वही, पृ.272

9 अभिधानप्पदीपिका एकक्खरकोससहिता (पालिसद्दकोसो), वही, पृ.88

10 पालि-हिन्दी कोश, वही, पृ.329

11 अभिधानप्पदीपिका एकक्खरकोससहिता (पालिसद्दकोसो), वही, पृ.105

12 खुद्दकपाठो (प्रधान सम्पादक) भिक्षु सत्यपाल एवं (सम्पादक) ओम प्रकाश पाठक, नई दिल्लीः बुद्ध त्रिरत्न मिशन, 1992, पृ.75

13 पालि भाष्यकोश (सम्पादक) सविता काम्बले , नई दिल्लीः सम्यक प्रकाशन, 2010, पृ.189

14 भरत-सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास , प्रयागः हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 2000, पृ.637

15 Dictionary of Pāli Proper Names Vol.II (Ed.) G.P. Malalasekera, New Delhi: Munshiram Manoharlal Private Limited, 2002, p.52.

16 भिक्षु धर्मरक्षित, बौद्ध धर्म-दर्शन तथा साहित्य , वाराणसीः नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, 1965, पृ.108

17 गन्धवंसो (सम्पादक) बिमलेन्द्र कुमार , दिल्लीः ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1992, पृ.9

18 वही, पृ.10

19 वही, पृ.21

20 Dictionary of Pāli Proper Names Vol.I (Ed.) G.P. Malalasekera, New Delhi: Munshiram Manoharlal Private Limited, 2002, p.727.

21 K.R. Norman, A History of Indian Literature, Wiesbaden: Otto Harrassowitz, 1983, p.152.

22 भिक्षु धर्मरक्षित, बौद्ध धर्म-दर्शन तथा साहित्य, वही, पृ.108

23 K.R. Norman, A History of Indian Literature, Ibid, p.152.

24 भिक्षु धर्मरक्षित, बौद्ध धर्म-दर्शन तथा साहित्य, वही, पृ.108

25 अभिधम्मत्थसंगहो पठमो भागो (सम्पादक एवं अनुवादक) भदन्त रेवतधम्म एवं रामशंकर त्रिपाठी , वाराणसीः सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 1991, पृ.17

26 खुद्दकपाठो, वही, पृ.74

27 वही